+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

YOJANA MAGAZINE ANALYSIS

(योजना पत्रिका विश्लेषण)

(डिजिटल युग में कला और संस्कृति)

(March 2024)

(Part III)

TOPICS TO BE COVERED

- उपचार और अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है कला
- कला संग्रहालयों पर डिजिटल प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया
- भारत की कलात्मक विरासत का संरक्षण

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

उपचार और अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है कला:

परिचय:

- कला स्वयं के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति है। यह विश्व के प्रति कलाकार का अपना अनूठा दृष्टिकोण है। भाषा अथवा संगीत की भांति ही कला भी मानव को मिली ऐसी ईश्वरीय या कहें कि प्राकृतिक देन है जो उसे पशुओं की तुलना में श्रेष्ठ बनाती है। कला मानव मस्तिष्क या मनुष्य की सोच को कुछ इस प्रकार प्रभावित करती है जिसे ज्ञान अथवा शिक्षा के माध्यम से सही-सही समझ पाना सहज नहीं है।

- परन्तु कला के माध्यम से हम मानव स्वयं अपने बारे में बहुत गहराई से जान-समझ पाते हैं तथा अन्य लोगों के साथ सामंजस्य और एकात्मकता भी स्थापित करने में सफल हो सकते हैं।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

कला आत्म विकास का प्रभावी और सशक्त साधन :

- मनोवैज्ञानिक विश्लेष्कों ने निष्कर्ष निकाला है कि कला आत्म विकास या हृदय परिवर्तन का प्रभावी और सशक्त साधन है जिससे व्यक्ति समूची मानवता के लिए उपयोगी भूमिका निभाने योग्य बन जाता है।
- दार्शनिक रूप से देखें तो कला सदैव वास्तविकता और समस्या को अभिव्यक्ति करती है- जो उस वास्तविकता के प्रति प्रतिक्रिया होती है जिसमें हमें रहना पड़ता है। यह वास्तविकता की आलोचना प्रशंसा या उसमें सुधार की गूंज होती है।
- कला वास्तविकता का आदर्श मॉडल प्रस्तुत करती है या कई बार यह वास्तविकता की आलोचक या विरोधी भी बन जाती है।

कला का रोग निवारक तथा उपचारात्मक प्रभाव:

- मनोरंजन के लिए कला को तभी से माध्यम बनाया जा रहा है जब मानव गुफाओं में रहता था। अनादि काल से ही गुफाओं में रहने वाले मनुष्यों ने कला की मनोरंजक क्षमता के साथ ही इसकी रोग निवारक तथा उपचार क्षमता को भी भली प्रकार जान लिया था।
- मुक्त अभिव्यक्ति या मन की उलझन को व्यक्त कराना मनोवैज्ञानिकों की सर्वाधिक उपयोगी उपचार प्रणाली रही है। इस चिकित्सा पद्धति में उपचार के लिए कलात्मक अभिव्यक्ति के इसी पहलू का प्रयोग किया जाता है।

- कला उपचार पद्धति में कला की आत्माभिव्यक्ति के माध्यम से चिकित्सा करने पर बल दिया जाता है। समन्वित क्रियाएं अपनाकर कला थेरेपी में मन, शरीर और आत्मा के बीच सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास रहता है, जो मौखिक या शाब्दिक अभिव्यक्ति से भिन्न और अधिक प्रभावी होता है।
- इसकी मूल धारणा यही है कि कला थेरेपी या कला चिकित्सा में लोग अपनी भावनाओं को जान-समझकर नए परिप्रेक्ष्य में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकते हैं।
- कला चिकित्सक (थेरेपिस्ट) एक सेशन (बैठक) में यह समझने का प्रयास करता है कि तनाव या कष्ट का मूल कारण क्या है। फिर चिकित्सक रोगी को ऐसी कला के सृजन की प्रेरणा देता है जिसमें उसकी समस्या का कारण स्पष्ट हो सके। यह एकदम स्वस्फूर्त और मुक्त रूप से की गई कृति होनी चाहिए जिसमें किसी वर्ग विशेष को लक्ष्य न किया गया हो।

बच्चों के समस्याओं की कला के माध्यम से पहचान:

- कई बच्चे अपनी भावनाएं बोलकर बताने की जगह ड्राइंग या पेंटिंग बनाकर या किसी अन्य कलात्मक तरीके से ज्यादा अच्छी तरह से व्यक्त कर पाते हैं, बोलकर नहीं।
- कला चिकित्सक बच्चे की इस कला अभिव्यक्ति की मदद से उसकी भावनाओं और सोच को बेहतर ढंग से आसानी से समझ सकते हैं। वे बच्चों को यह भी ठीक से समझा सकते हैं कि वे सृजनात्मक या रचनात्मक माध्यम अपनाकर अपनी परेशानियां व्यक्त करें।

- उल्लेखनीय है कि कष्ट और तनाव झेलने वाला बच्चा आमतौर पर यह अनुमान नहीं लगा सकता कि जो कुछ भी हो रहा है वह क्यों और कैसे हो रहा है? रंगों की मदद से वह अन्य लोगों को अपनी जरूरतों के बारे में बताने और अपनी भावनाएं उन तक पहुंचाने में ज्यादा आसानी महसूस कर सकता है।
- एक विशेष परिस्थिति के उदाहरण से समझिए किंडरगार्टन (केसी) में पढ़ने वाले एक बेचैन और फुर्तीले बच्चे ने अपने आर्ट पेपर पर काले और भूरे रंग भरकर बनाई पेंटिंग को नाम दिया 'थिएटर में फिल्म देखते हुए।' इस पर इसके अध्यापक को उत्सुकता हुई और उसने जब बच्चे से अकेले में बात की तो उसे साफ समझ में आ गया कि वह छोटा बच्चा थिएटर में फिल्म देखते समय आगे वाली पंक्ति की काली सीट के पार या उसके आगे का कुछ भी नहीं देख पाता था।
- पेंटिंग की कला के जरिए वह बच्चा अपनी बेचैनी का कारण बयान करने में कामयाब हुआ और अपने से बड़ी उम्र वाले लोगों को समझा पाया कि थिएटर में तीन घंटे के उस समय में उसके मन-मस्तिष्क पर क्या कुछ गुजरती थी। यदि कला की सहायता नहीं मिल पाती तो उस बच्चे को उसके अभिभावक और देखरेख करने वाले जिद्दी और बेचैन बताकर उसकी अनदेखी करते रहते।

दिव्यांग या विशेष जरूरतों वालों के लिए कला का महत्व:

- विशेष जरूरतों वाले लोग खासकर बच्चे, दुनिया का जैसा अनुभव करते हैं उसकी हम इस लेख को पढ़ने वाले सामान्य लोग कल्पना भी नहीं कर सकते। शारीरिक, मानसिक या मनोवैज्ञानिक दृष्टि से दिव्यांगता की चुनौती को झेलना अपने-आप में बड़ी कठिन त्रासदी है।
- इस प्रकार की दिव्यांगता वाले बच्चों को संचार यानी अपनी बात समझाने और सामने वाले की बात समझने की संकटपूर्ण स्थिति से गुजरना पड़ता है। उन बच्चों के माता-पिता और भाई-बहन भी उनके सबसे करीबी होने के बावजूद दुनिया के बारे में उनके नजरिये को नहीं समझ पाते। इसकी साधारण सी वजह यही है कि दुनिया के बारे में उनका अनुभव इतना अलग तरह का होता है कि उसके बारे में बता पाना बेहद मुश्किल होता है।
- कला के माध्यम से विशेष जरूरतों वाले बच्चों की अनेकानेक तरीकों से मदद की जा सकती है और उनका उपचार भी हो सकता है।
- हर व्यक्ति में कला की किसी न किसी विधा में सृजन करने की क्षमता और योग्यता होती है। इसलिए जो बच्चे शैक्षिक, व्यावसायिक अथवा शारीरिक उपलब्धियों के मानकों के हिसाब से कामयाब नहीं हो पाते वे कला का निर्माण तो अवश्य ही कर सकते हैं। इसके लिए बस खूबसूरत रंग पेंसिल या मोमी रंग अर्थात क्रेयॉन्स की जरूरत होती है।
- सबसे अहम बात यह है कि कला व्यक्ति (बच्चे) को समूची प्रक्रिया का संचालक बना देती है। कलाकार अपनी इच्छा से आगे बढ़ता है और सही या गलत उत्तर की जरा सी भी परवाह

किए बिना अपना कार्य करता चला जाता है। इससे बच्चे का आत्मविश्वास बढ़ता है और उसे अपनी अभिव्यक्ति के लिए अधिक से अधिक प्रयोग करने का संबल प्राप्त होता जाता है।

- कला को चिकित्सा पद्धति के रूप में प्रयोग करने के पीछे मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया का उद्देश्य ऐसी शान्त मनःस्थिति प्राप्त करना है जो सही-गलत या अच्छे बुरे जैसे कोई भी निर्णय न ले। कुल मिलाकर चिकित्सा और ऊर्जा के स्रोत के रूप में कला के लाभ संक्षेप में इस प्रकार हैं:
  - ➢ **अभिव्यक्ति में सहायक:** जब व्यक्ति अपने भावनात्मक विचारों को देखने की स्थिति पा लेता है और उन्हें स्पष्ट रूप से देख पाता है तो उसे ऐसी भावनाओं के स्रोत का विश्लेषण करने में सहायता मिलती है। यह चिकित्सा को दिशा में पहला चरण है।
  - ➢ **विश्वास जमाना और नियंत्रण प्राप्त करना:** कला कभी 'गलत' नहीं होती। कला के इस स्वाभाविक गुण स्वभाव से ही कलाकार में स्थिति पर नियंत्रण पा लेने का भाव जगता है और उसमें इच्छित विकल्प चुनने की क्षमता-योग्यता भी आ जाती है।
  - ➢ **किसी बच्चे की बौद्धिक निपुणता और ग्राह्य क्षमता में सुधार।**
  - ➢ **सृजनात्मक अभिव्यक्ति:** कला सदा ही रचनात्मक और सकारात्मक होती है तथा विनाश और अड़चन/बंधन की विरोधी होती है। यह आत्माभिव्यक्ति जगाकर उसे सहेजती है जो सृजनशीलता को जन्म देती है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

कला संग्रहालयों पर डिजिटल प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया का प्रभाव:

परिचय:

- संग्रहालय शक्तिशाली स्थान हैं। जीवन के सभी क्षेत्रों से लोग इसे समझने और इसके बारे में खुद को जागरूक करने के लिए एक तरह के क्यूरेटेड संग्रह को देखने आते हैं। संग्रहालयों में 'कला' संग्रहालय विशेष संग्रहालय हैं जो दुनिया भर या विशिष्ट क्षेत्रों से कला एकत्र करते हैं, संरक्षित करते हैं और प्रदर्शित करते हैं। दुनिया भर में कई देशों में कला संग्रहालय मौजूद है।

- कला संग्रहालय एक सार्वजनिक या निजी संस्थान है जो जनता की शिक्षा और आनंद के लिए कला के कार्यों को एकत्रित, संरक्षित, प्रदर्शित और व्याख्या करता है। इन संस्थानों में आम तौर पर पेंटिंग, मूर्तिया, फर्नीचर, चित्र, प्रिंट, तस्वीरें, कपड़ा, चीनी मिट्टी की चीजें और सजावटी कला सहित विविध प्रकार की कलात्मक वस्तुएं होती हैं।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

भारत में संग्रहालय:

- भारत कई कला संग्रहालयों का घर है जो देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और कलात्मक परंपराओं को प्रदर्शित करते हैं।
- **राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली:** राष्ट्रीय संग्रहालय भारत के सबसे बड़े संग्रहालयों में से एक है, जिसमें भारतीय इतिहास के विभिन्न कालखंडों की कला कलाकृतियों और पुरावशेषों का विशाल संग्रह है। इसमें मूर्तिकला, पेंटिंग सजावटी कला सिक्के और पांडुलिपियों का संग्रह है।
- **नैशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट, नई दिल्ली:** 1954 में स्थापित, नैशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट भारत के प्रमुख कला संस्थाओं में से एक है, जो आधुनिक और समकालीन भारतीय कला का प्रदर्शन करता है। इसमें प्रसिद्ध भारतीय कलाकारों द्वारा चित्रों, मूर्तियों और अन्य कलाकृतियों का एक व्यापक संग्रह है।
- **सालार जंग संग्रहालय, हैदराबाद:** मूसी नदी के तट पर स्थित है, सालारजंग संग्रहालय कला और प्राचीन वस्तुओं का दुनिया भर में सबसे बड़े निजी सग्रहों में से एक है। इसके संग्रह में विभिन्न संस्कृतियों और सभ्यताओं की पेंटिंग, मूर्तियां, वस्त्र, चीनी मिट्टी की चीजें और फर्नीचर शामिल है।

- **छत्रपति शिवाजी महाराज वास्तु संग्रहालय (पूर्व में प्रिंस ऑफ वेल्स संग्रहालय) मुंबई:** मुंबई के इस संग्रहालय में भारतीय कला का एक प्रभावशाली संग्रह है जिसमें भारतीय इतिहास के विभिन्न कालखंडों की मूर्तियां, लघु चित्र सजावटी कला और कलाकृतियां शामिल हैं।
- **भारतीय संग्रहालय कोलकाता:** 1814 में स्थापित भारतीय संग्रहालय भारत का सबसे पुराना और बड़ा संग्रहालय है। इसमें कला और कलाकृतियों का एक विशाल संग्रह है, जिसमें मूर्तिया, पेंटिंग, सिक्के और पुरातात्विक खोज शामिल हैं जो भारत और अन्य एशियाई देशों की सांस्कृतिक विरासत का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- **सरकारी संग्रहालय और आर्ट गैलरी चंडीगढ़:** चंडीगढ़ के इस संग्रहालय में गांधार मूर्तियां लघु चित्र और समकालीन भारतीय कला, कलाकृतियों का एक विविध संग्रह है। इसमें सिंधु घाटी सभ्यता की कलाकृतियों का एक महत्वपूर्ण संग्रह भी है।
- **जहांगीर आर्ट गैलरी मुंबई:** 1952 में स्थापित, जहांगीर आर्ट गैलरी मुंबई की सबसे प्रमुख कला दीर्घाओं में से एक है। यह उभरते और स्थापित दोनों भारतीय कलाकारों के कार्यों को प्रदर्शित करने वाली नियमित प्रदर्शनियों का आयोजन करता है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

कला संग्रहालयों में डिजिटलीकरण का उपयोग:

- कला संग्रहालय अपने संग्रह को व्यापक दर्शकों के लिए अधिक सुलभ बनाने के लिए डिजिटलीकरण को तेजी से अपना रहे हैं।
- इसमें कलाकृतियों का डिजिटलीकरण करना, आभासी प्रदर्शनिया बनाना और शिक्षा और आउटरीच के लिए ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का उपयोग करना शामिल है।
- डिजिटलीकरण संग्रहालयों को नाजुक वस्तुओं को संरक्षित करने, वैश्विक दर्शकों तक पहुंचने और गहन अनुभवों के लिए नई प्रौद्योगिकियों के साथ जुड़ने की अनुमति देता है।
- हालांकि, फंडिंग, कॉपीराइट मुद्दे और डिजिटल संरक्षण सुनिश्चित करने जैसी चुनौतियां डिजिटलीकरण के प्रयास करने वाले संग्रहालयों के लिए महत्वपूर्ण सोच-विचार बनी हुई है।

संग्रहालय और सोशल मीडिया:

- सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म संग्रहालयों को दर्शकों से जुड़ने, उन्हें नए तरीकों से जोड़ने और उनके शैक्षिक और सांस्कृतिक मिशनों को पूरा करने के लिए शक्तिशाली उपकरण प्रदान करते हैं।
- सोशल मीडिया संग्रहालयों को व्यापक दर्शकों तक पहुंचने की अनुमति देता है, जिसमें युवा पीढ़ी, अपने भौगोलिक क्षेत्र से बाहर के लोग और वे लोग शामिल हैं जो आमतौर पर संग्रहालय में जाने पर विचार नहीं करते हैं।

- इंस्टाग्राम, ट्विटर जैसे प्लेटफॉर्म संग्रहालयों को कहानियां, पर्दे के पीछे की झलकियां, शैक्षिक सामग्री और इंटरैक्टिव अनुभव साझा करने में सक्षम बनाते हैं, जिससे आगंतुकों के साथ गहरी सहभागिता को बढ़ावा मिलता है।
- संग्रहालय, सोशल मीडिया के माध्यम से ऑनलाइन समुदाय बना सकते हैं, बातचीत को बढ़ावा दे सकते हैं। फीडबैक को प्रोत्साहित कर सकते हैं और आगंतुकों के बीच अपनेपन की भावना पैदा कर सकते हैं।

निष्कर्ष:

- कला संग्रहालय सांस्कृतिक केंद्र और हॉटस्पॉट के रूप में काम करते हैं जहां आगंतुक क्यूरेटेड प्रदर्शनियों, व्याख्यान, कार्यशालाओं और विशेष कार्यक्रमों जैसे शैक्षिक कार्यक्रमों के माध्यम से कला, इतिहास और विभिन्न संस्कृतियों के साथ जुड़ सकते हैं और सीख सकते हैं।
- वे सांस्कृतिक विरासत को सुनिश्चित करने, रचनात्मकता को बढ़ावा देने, नए विचारों को पोषण करने और विविध समुदायों के बीच संवाद और समाज को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

भारत की कलात्मक विरासत का संरक्षण:

राष्ट्रीय संग्रहालय: भारत की बहुमुखी विरासत का संरक्षक

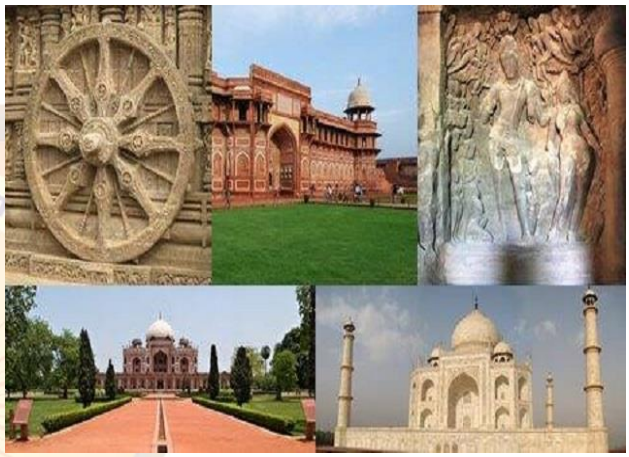

- राष्ट्रीय संग्रहालय भारत के 1000 वर्षों से अधिक की कला और कलाकृतियों के इतिहास संबंधी भंडार के रूप में खड़ा है। मूर्तियों, चित्रों, पांडुलिपियों, सिक्कों हथियारों और वस्त्रों सहित 210.000 से अधिक वस्तुओं के संग्रह के साथ, यह भारत की विविध सांस्कृतिक विरासत के संरक्षक के रूप में कार्य करता है।

राष्ट्रीय संग्रहालय में जीर्णोद्धार:

- संरक्षण विभाग द्वारा शुरू की गई उल्लेखनीय बहाली परियोजनाओं में रक्षा मंत्रालय में दीवार चित्रों का संरक्षण और पुनर्स्थापन और वित्त मंत्रालय में चित्रों का परिरक्षण है।
- ये प्रयास न केवल संग्रहालय के संग्रह की सुरक्षा बल्कि सरकारी संस्थानों में रखे गए महत्वपूर्ण राष्ट्रीय खजानों के लिए भी विभाग की प्रतिबद्धता को उजागर करते हैं।
- 1950 में संग्रहालय के साथ स्थापित संरक्षण प्रयोगशाला, सावधानीपूर्वक पुनरुद्धार प्रयासों के माध्यम से इन खजानों को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

राष्ट्रीय आधुनिक कला गैलरी (NGMA): समकालीन कलात्मक विरासत का संरक्षक

- आधुनिक भारतीय कला को बढ़ावा देने और संरक्षित करने के समर्पण में 1954 में स्थापित नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट (NGMA) या राष्ट्रीय आधुनिक कला गैलरी भारत की समकालीन कलात्मक विरासत के एक सतर्क प्रबंधक के रूप में खड़ा है।
- NGMA की प्रमुख गैलरियों की जलवायु परिस्थितियों को पूरे वर्ष एक केन्द्रीय वातानुकूलन संयंत्र द्वारा नियंत्रित किया जाता है, जो नाजुक कलाकृतियों के संरक्षण के लिए आवश्यक स्थिर वातावरण प्रदान करता है।
- इसके अलावा, पुनर्स्थापन कला के कार्यों का समय-समय पर निरीक्षण करता है, और आवश्यकतानुसार पेशेवर रूप से क्षतिग्रस्त टुकड़ों को बहाल करता है।
- पुनर्स्थापना से पहले और बाद की कलाकृतियों का दस्तावेजीकरण करने वाली तस्वीरें, प्रक्रिया के विभिन्न चरणों को प्रदर्शित करती हैं; आगे के शोध और भविष्य के संदर्भ के लिए सावधानीपूर्वक बनाए रखी जाती हैं।

निष्कर्ष:

- संक्षेप में राष्ट्रीय संग्रहालय और राष्ट्रीय आधुनिक कला गैलरी भारत के कलात्मक खजाने को संरक्षित करने, आने वाली पीढ़ियों के लिए उनकी दीर्घायु और पहुंच सुनिश्चित करने के लिए कठोर संरक्षण प्रथाओं को लागू करने की राष्ट्रीय जिम्मेदारी को निभाते हैं।